

रजिस्टर किया गया, जो कि लगभग 40 वर्षों के बाद अत्यधिक विग्न से स्वीकृत हुआ। खरीद की थी, जिसका इंतकाल सं. 971 दिनांक 08.12.2009 को स्वीकृत कर दर्ज राम जी कुंहर निवासी श्रीकांठ न. मोहल्लासिंह से जारिये बैयनामा दिनांक 4.6.1971 उक्त कृषि भूमि में से खसरा नम्बर 724 की 25 बीघा 02 बिस्वा कृषि भूमि रुखमणी पत्नी स्वर्णवास के बाद उक्त कृषि भूमि का विरासतन इंतकाल रेग्गोइंटस के नाम चला था। भूमि पूर्व में रेग्गोइंटस के पिता/पति श्री महोबलसिंह के नाम से थी। महोबलसिंह के श्रीकांठ के खसरा नम्बर 366, 564, 723, 724 व 548 की कुल 346 बीघा 15 बिस्वा कृषि भूमि का अपील के साक्ष्य तथ्य इस प्रकार है कि बाके रोही ग्राम कानासर तहसील इस्तान्तरित होकर आई है।

1- यह अपील न्यायालय अतिरिक्त आयुक्त उपनिवेशन एवं राजस्व अपील अधिकारी, श्रीकांठ से राज्य सरकार की अधिसूचना दिनांक 26.08.2016 के क्रम में इस न्यायालय में विवेक प्रस्तुत हुई है।

न्यायालय कलक्टर एवं उपर्युक्त उपनिवेशन, श्रीकांठ के निर्णय दिनांक 04.01.2012 के यह अपील राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 75 के अन्तर्गत दिनांक : 25.02.2021

निर्णय

उपरिष्ठतः श्री विजय भादणी
- अभिभाषक अपीलेंट
श्री राजन्सिंह शिमला
- अभिभाषक रेग्गोइंटस

रेग्गोइंटस

1.	बजरगसिंह	राजस्थान सरकार जारिये पेंकोरराज
2.	धन्सिंह	
3.	श्वणसिंह	
4.	पूर्णासिंह	जिला श्रीकांठ।
5.	गनसिंह	
6.	रुखमा	
7.		

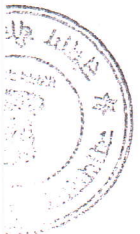
:- बर्नाम :-

अपीलान्टस

1. सुभरसिंह पुत्र श्री सुरजाराम जालि जाट निवासी रतनासर तहसील लूनाकरासर।
2. सूर्य प्रकाश पुत्र श्री भवरलाल जालि माली निवासी पुरानी निम्नाणी, श्रीकांठ।

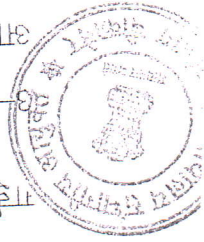
अपील संख्या : 151/2016 एल.आर.एक्ट

न्यायालय संभागीय आयुक्त, श्रीकांठ संभाग, श्रीकांठ
पीठासीन अधिकारी श्री भूवर लाल मेहरा, आई.ए.एस.



4- विद्वान अभिभाषक अधीनस्थ ने अपनी बहस में कथन किया है कि अधीनस्थ ने वादागत भूमि जारिये विक्रय पत्र खरीद की थी तथा उनके नाम से इंतकाल बंद गया। इंतकाल बंद जाने के पश्चात् पूर्व खातेदार कुछमणी का उस भूमि पर हक, निहित नहीं था, इसके पश्चात् भी अदालत मातहत ने मौजूदा रेकार्ड देखे बिना एकतरफा तौर पर उसके इंतकाल को खारिज करने में कानूनी भूल की है। पूर्व में कुछमणी का इंतकाल में जब कुछमणी ने उक्त भूमि अधीनस्थ को बेव दी तो उसका इंतकाल उस इंतकाल से मर्ज हो जाता है तथा उसके इंतकाल की कोई अहमियत अकेले की शेष नहीं रहती है। रेस्पॉडेंट्स की अधील मियाद बाहर थी, जिसमें अधीनस्थ को नहीं सूना गया। कुछमणी के पक्ष में विक्रय पत्र जब तक स्टैण्ड करता है, उस इंतकाल को किसी भी कारण से खारिज नहीं किया जा सकता। विक्रय पत्र को निरस्त करने के पश्चात् ही इंतकाल खारिज किया जा सकता है। इस विधि के प्रावधान को अनदेखा करके अधीनस्थीन आदेश पारित किया गया है। विक्रय पत्र तस्दीक होने के बाद कभी भी इंतकाल बंदया जा

गई है।
रेस्पॉडेंट्स स्वयं अथवा उनकी ओर से कोई भी विधिक प्रतिनिधि अदालत द्वारा आवाज नगवाने के उपरान्त सुनवाई हेतु अदालत में उपस्थित नहीं होने पर प्रकरणा को भ्रिट पर लिया जाकर सूना गया।

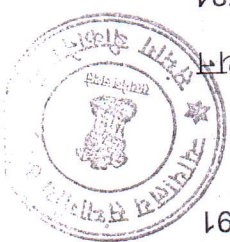


है। कुछमणी पति रामू जी कुम्हार ने उक्त रकबा अधीनस्थ को बेवान कर दिया, लिहाजा बेदानमा दिनांक 5.3.2010 के आधार पर इंतकाल सं. 1011 अधीनस्थ के पक्ष में स्वीकृत कर दर्ज रजिस्टर किया गया। इंतकाल सं. 971 के विरुद्ध रेस्पॉडेंट्स द्वारा एक अधील पित्त/पति महोबतसिंह ने कुछमणी पति रामूजी को उक्त कृषि भूमि ख.नं. 724 की 25 बीघा 02 बिस्वा का बेवान नहीं किया था। कुछमणी पति रामूजी ने फर्जी कंटरसिबत बेदानमा के आधार पर लगभग 40 वर्षों के बाद वादागत भूमि का इंतकाल सं. 971 अपने नाम स्वीकृत करवा कर यह भूमि अधीनस्थ सं. 1 व 2 क्रमशः सुमेरसिंह व सूर्य प्रकाश को बेवान कर दी थी, जबकि इंतकाल सं. 400 दिनांक 08.12.2001 को महोबतसिंह के वारिसान के नाम विरासतन दर्ज हो चुका है। उक्त अधील में रेस्पॉडेंट कुछमणी के निमित्त समन अखबार में साया होने के बावजूद उपस्थित नहीं हुई। अतः अधीनस्थ द्वारा खरीद की गई उक्त कृषि भूमि फर्जी बेवान के आधार पर होना मानते हुए अधिनस्थ न्यायालय कलक्टर एवं उपायुक्त उपनिवेशन, बीकानेर ने अपने अधीनस्थीन आदेश दिनांक 04.01.2012 के द्वारा कुछमणी पति रामूजी के हक में दर्ज इंतकाल सं. 971 दिनांक 8.12.09 निरस्त कर दिया, जिससे अधीनस्थ के मालिकाना व कालिजाना हिल प्रभावित होने के कारण अधीनस्थीन आदेश से ब्यहित होकर यह अधील हमारे समक्ष इस न्यायालय में प्रस्तुत की

अधिनियम की धारा 15-ए की पालना में यदि कोई काश्तकार खातेदारी अधिकार अपनी के नोटिफिकेशन सन 1959 से उपनिवेशन क्षेत्र घोषित हो गया एवं राजस्थान काश्तकारी होकर बन्दोबस्ती काश्तकार के रूप में दर्ज रिकार्ड थी। गांव कानासर राजस्थान सरकार अधीनस्थान विवादित कृषि भूमि खसरा सं. 724 तादादी 25.02 बीघा खातेदारी कृषि भूमि न उनके वारिसान के नाम से इंतकाल संख्या 400 दिनांक 8.12.2001 दर्ज हो चुका था।

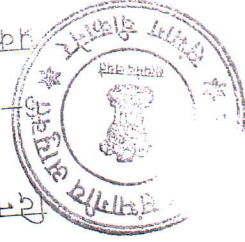
5- विद्वान अभिभाषक रेस्पॉडेंट्स ने लिखित बहस प्रस्तुत की। लिखित बहस में कथन

नहीं प्रस्तुत कर यह अपील अधीनस्थीकार करने का निवेदन किया है।
 छोटलाल वगैरह, पंज सं. 168 एवं RRC 1999 बजरंग वगैरह बराम कांवराम, पंज 291
 RRC 1999 भूरीलाल व अन्य बराम नारूलाल वगैरह, पंज 297, RD 1994 प्रहलाद बराम
 खातिदेवी, पंज 460, RRC 1998 मोहम्मद शरीफ बराम लीलाधर व अन्य, पंज 654-55,
 बराम स्टेट व अन्य, पंज 24-25, RRT 2016-17 (Supp.) कार्गुसिंह बराम श्रीमती
 2007(1) सतार व अन्य बराम बूलाल व अन्य, पंज 18-19, RRT 2007(1) इन्द कंवर
 प्रश्न ही नहीं उठता है। विद्वान अभिभाषक अधीनस्थीकार करने के समर्थन में RRT
 का भी कोई अधिकार श्रेण नहीं रहता है, जो फिर उसके वारिसों को अधिकार मिलने का
 ही उक्त भूमि का हस्तान्तरण कखमणी को कर दिया था। इस कारण उस पर महोबतसिंह
 से कखमणी को पाबंद नहीं किया जा सका क्योंकि महोबतसिंह ने अपने जीवनकाल में
 नाम इंतकाल बह भूमि भी सम्मिलित कर ली गई, जो भी उस इंतकाल
 निवेदन किया है। उक्त भूमि पर महोबतसिंह की मृत्यु के पश्चात् यदि उसके वारिसों के
 सुरक्षा हेतु एवं न्यायहित में अधीनस्थीकार करने की स्वीकृति प्रदान करने हेतु
 खातेदार थे। इस कारण उनके हक प्रभावित हुए हैं, इस कारण अपने विधिक हकों को
 गया था, जबकि उस दिन उनके नाम से इंतकाल बह भूमि था तथा उस भूमि के वे
 से निरस्त योग्य है। अदालत मातहत की कार्यवाही में अधीनस्थीकार नहीं बनाया
 अदालत मातहत ने अपना मोटिव पूरा करते हुए अपील को स्वीकार किया है, जो हर तरह
 करने के लिये अदालत से स्वीकृति ली जानी आवश्यक थी परन्तु ऐसा ना करके
 तहसीलदार के न्यायालय में रेस्पॉडेंट्स पक्षकार नहीं थे, जो उनको प्रथम अपील पेश
 इसके बावजूद भी उनकी अपील को स्वीकार करना विधि सम्मत नहीं है। प्रथम जो
 कोई हक नहीं है। इस कारण उनको अपील करने का भी कोई लोकस स्टण्डर्ड नहीं थी।
 भूमि पर विरासतन अधिकार मिलेंगे, जो पाक व साफ है। विक्रय श्रुति भूमि पर उसको
 सकता है। इसके लिये कोई समयावधि निश्चित नहीं है। महोबतसिंह के वारिसों को उसी



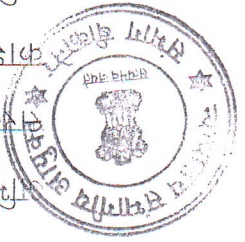
महोदयों के नाम से थी। महोदयों के स्वर्गास के बाद उक्त कृषि भूमि का 724 व 548 की कुल 346 बीघा 15 बिस्वा कृषि भूमि पूर्व में रेगिस्ट्रार के पिता/पति श्री कृषि भूमि वाके रोही ग्राम कानार तहसील बीकानेर के खसरा नम्बर 366, 564, 723, एवं अधिनस्थ न्यायालय की पञ्चवली का अवलोकन व मनन किया। प्रकरण में वादगत

5- हमने विद्वान अभिभाषक उमयपक्ष की बहस, उनके द्वारा प्रस्तुत न्यायिक दृष्टान्तों क्रियान्विती ही चुकी है। इस आधार पर अपील खारिज करमाई जावे।
दिनांक 04.01.2012 न्यायालय कलक्टर एवं उपायुक्त उपनिवेशन, बीकानेर के आदेश की ही चुकी है, जिसमें दिनांक 03.10.20213 को निर्णय पारित हो चुका है। आदेश जो अपील प्रकरण रिमाण्ड होकर सुनवाई हेतु न्यायालय तहसीलदार, कोलायत-1 के समक्ष प्रस्तुत विद्वान अभिभाषक रेगिस्ट्रार ने अपनी लिखित बहस में यह भी कथन किया कि दिनांक 21.02.2012 को पारित किया।



आवेदन किया, जिसको स्वीकार कर निर्णय दिनांक 04.01.2012 में संशोधित आदेश निर्णय पारित करे एवं रेगिस्ट्रार/अपीलेंट द्वारा निर्णय दिनांक 04.01.2012 में संशोधन का अधिनस्थ को सुनवाई का एवं सर्वत पेश करने का अवसर प्रदान कर पुनः विधि सम्मत प्रकरण को इस दिशा-निर्देश के साथ तहसीलदार, कोलायत-1 को रिमाण्ड किया कि तहसीलदार कोलायत-1 के आदेश क्रमांक 592 दिनांक 08.12.2009 को निरस्त कर निर्णय दिनांक 04.01.2012 पारित कर नामान्तरकरण संख्या 971 दिनांक 08.12.2009 व की गयी, जिसे न्यायालय द्वारा विधिक प्रक्रिया अपना कर सुन कर अपील स्वीकार कर की जो प्रकरण संख्या 33/2010 बखानवान बजरंगसिंह आदि बानम रुखमणी देवी दर्ज के विरुद्ध न्यायालय कलक्टर एवं उपायुक्त उपनिवेशन, इगानप, बीकानेर में अपील प्रस्तुत अधिकारी के आदेश के नहीं हटया जा सकता, जिसकी जानकारी होने पर उक्त आदेश करवा कर रेगिस्ट्रार का नाम आरविंदी रूप से हटा दिया, जो बिना किसी संक्षम को सुनवाई का मौका प्रदान किये नामान्तरकरण संख्या 971 दिनांक 8.12.2009 दर्ज श्री कुन्धर साकिन बीकानेर ने बिना किसी संक्षम न्यायालय के आदेश के बिना रेगिस्ट्रार पूर्वक काबिल कारत है। स्व. मोहब्बतसिंह के स्वर्गास के बाद श्रीमती रुखमणी पति राम खसरा संख्या 724 तादादी 25.02 बीघा पर आज भी रेगिस्ट्रार सं. 1 ता 6 का शांति करने का अधिकार नहीं था क्योंकि उक्त कृषि भूमि सहदायकी हक हकूकों की थी। किसी को काबिल करवाया था एवं स्व. मोहब्बतसिंह को सम्पूर्ण भूमि खसरा की विक्रय वारसविक रूप से कब्जा किसी भी व्यक्ति या व्यक्तियों को सुपुर्द नहीं किया था, न ही उसका कोई भाग का कभी भी विक्रय नहीं किया था एवं न ही कभी मौका पर भौतिक व स्व. मोहब्बतसिंह ने अपने जीवनकाल में कभी भी अपने नाम से धारण की कृषि भूमि व नोटिकेशन के प्रभावशील होने पर खतोदार कारतकार नहीं रहा। रेगिस्ट्रार के पूर्वज आराजी पर रखता था, को भी कैटेगरी लाउन कर दिया गया था अथवा 98 इस

विरासतन इतकाल स. 400 रेसोडेटस के नाम बला था। उक्त कृषि भूमि में से खसरा नम्बर 724 की 25 बीघा 02 बिस्वा कृषि भूमि रुखमणी पत्नि राम जी कुम्हार निवासी बिकानेर ने महाबतसिंह से जरिये बैयनामा दिनांक 4.6.1971 खरीद की थी, जिसका इतकाल स. 971 दिनांक 08.12.2009 को दर्ज हुआ, जो कि अत्यधिक विलम्ब लगभग 40 वर्षों के बाद स्वीकृत हुआ है, जिसके संबंध में विद्वान अभिभाषक रेसोडेटस का कथन है कि बैयनामा फर्जी एवं कूट रचित था। रुखमणी पत्नि राम जी कुम्हार ने उक्त रकबा अपीलान्त को बैयान कर दिया, जिसका बैयनामा दिनांक 5.3.2010 के आधार पर इतकाल स. 1011 अपीलान्तस के पक्ष में दर्ज रजिस्टर हुआ। रिकार्ड पर उपलब्ध दस्तावेज के अनुसार इतकाल स. 971 के विरुद्ध रेसोडेटस द्वारा अपील स. 33/10 बजरासिंह बौरड बैयान रुखमणी पत्नि रामजी आदि के विरुद्ध न्यायालय कलक्टर एवं उपायुक्त उपनिवेशन, बिकानेर के समक्ष पेश कर निवेदन किया कि महाबतसिंह ने रुखमणी पत्नि रामजी को उक्त कृषि भूमि ख.नं. 724 की 25 बीघा 02 बिस्वा का बैयान नहीं किया था। रुखमणी पत्नि रामजी ने फर्जी कूटरचित बैयनामा के आधार पर लगभग 40 वर्षों के बाद वादान्त भूमि का इतकाल स. 971 अपने नाम स्वीकृत करवा कर यह भूमि अपीलान्तस स. 1 व 2 क्रमशः सुमरसिंह व सूर्य प्रकाश को बैयान कर दी थी, जबकि इतकाल स. 400 दिनांक 08.12.2001 को महाबतसिंह के वारिसान के नाम विरासतन दर्ज हो चुका है। इस प्रकार स्व. महाबतसिंह को भूमि बैयान का अधिकार होना तथा वादान्त भूमि का किया गया बैयान का विधिक परीक्षण किया जाना अत्यावश्यक है। यह जांच का विषय है कि महाबतसिंह द्वारा बैयान किस आधार पर किया गया, आया कि वादान्त भूमि महाबतसिंह की स्वामित्व सम्पत्ति थी अथवा सहदायकी अंश व हिस्सा व हक की भूमि थी। विद्वान अभिभाषक रेसोडेट का यह कथन भी सही प्रतीत होता है कि गांव कानासर राजस्थान सरकार के नाटिकेशन सन 1959 से उपनिवेशन क्षेत्र घोषित हो गया एवं राजस्थान सरकार की अधिनियम अपीलान्तस 15-ए की पालना में यदि कोई काश्तकार खातेदारी अधिकार अपनी आराजी पर रखता था, को भी कैंटगरी जउन कर दिया गया था अर्थात् वह इस नाटिकेशन के प्रभावशील होने पर खातेदार काश्तकार नहीं रहता। ऐसी स्थिति में महाबतसिंह को भूमि बैयान का अधिकार (Tribal Rights) नहीं था। अतः मोहबतसिंह द्वारा किया गया बैयनामा दिनांक 5.3.2010 भी प्रभावहीन माना जावेगा। विद्वान अभिभाषक अपीलान्त ने बहस में कथन किया कि वादान्त भूमि का इतकाल स. 1011 अपीलान्त स. 1 एवं उपायुक्त उपनिवेशन, बिकानेर ने अपने अपीलान्त आदेश दिनांक 4-1-2012 में इतकाल स. 971 निरस्त करते हुए प्रकरण को अधिनस्थ न्यायालय को इस निर्देश के



श्रीकांत
सामाजिक आर्यक
(श्रीवर लाल मेहरा)

2020

निर्णय आज दिनांक 25.02.2021 को खुले न्यायालय में सुनाया गया।

बाद तरतीब-तकमील दालिल दफतर है।

न्यायालय की पत्रावली निर्णय प्रति के साथ लौटायी जावे। पत्रावली नम्बर से कम होकर सर्टिफिकेट एवं बेतान का परीक्षण करा कर विधि सम्मत निर्णय पारित करें। अधिनस्थ साक्ष्य एवं सबूत पेश करने तथा सनवाई का समुचित अवसर देते हुए मूंसि के टाईटल भी पक्षकार बनाया जाकर अपीलेंट्स के साथ-साथ अन्य संबंधित सभी पक्षकारों को भी (Remand) किया जाता है कि प्रकरण में अपीलेंट सं. 1 व 2 सुमेरसिंह व सूर्य प्रकाश को ही मर्ड है। अतः प्रकरण तहसीलदार (राजस्थ) कोलायत को इस निर्देश के साथ प्रतिपठित जाता है। चूंकि वादगत कृषि मूंसि डी-कॉलोनाइज्ड होकर राजस्थ विभाग में वापिस मज कलमणी, राज.सरकार में पारित अपीलार्थीन आदेश दिनांक 04.01.2012 यथावत रखा उपनिवेशन, श्रीकांत द्वारा अपील सं. 30/2010 अनवान बजरंगसिंह वौरह बनाम उपरोक्त विवेचना के आधार पर अधिनस्थ न्यायालय कलक्टर एवं उपर्युक्त

जो आवश्यक पक्षकार थे, को भी सुना जाना उचित समझते हैं।

जो कि वादगत मूंसि में इतकाल सं. 1011 के आधार पर इनके हित प्रभावित होते हैं और सर्ट में अपीलेंट सं. 1 व 2 सुमेरसिंह व सूर्य प्रकाश को पक्षकार नहीं बनाया गया था, श्रीकांत के समक्ष प्रस्तुत हुई अपील सं. 33/2010 बजरंगसिंह वौरह बनाम कलमणी, उचित प्रतीत होता है। चूंकि अधिनस्थ न्यायालय कलक्टर एवं उपर्युक्त उपनिवेशन, इकर तथा विरासतन इतकाल पर विचार कर पुनः विधि सम्मत आदेश पारित करें, जो साथ रिमाण्ड किया है कि अपीलेंट्स को सनवाई व सबूत पेश करने का समुचित अवसर

